टिप्पणियाँ

3

सांझी कला

शिक्षार्थी, पिछले पाठ में हमने वर्ली कला के विषय में जाना। इस पाठ में हम सांझी लोककला के विषय में जानेंगे। सांझी कला सांझ अर्थात् संध्या को बनाई जाने वाली लोककला है। यह मूल रूप से राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और नेपाल तक प्रचलित है। विभिन्न जगहों में इसे विभिन्न नाम – सांझी, संझ्या, हंजा, हंझ्या, संध्या, संझा से जाना जाता है। संध्या अस्त होते सूर्य की पत्नी का नाम भी है। संध्या द्वारा निर्मित यह समय सूर्य के साथ-साथ सभी लोग के लिए सुख, आनंद एवं उल्लास का समय होता है।

कहा जाता है कि गोबर की सांझी का प्रारम्भ राजस्थान के अजमेर से हुआ। केले के पत्तों की सांझी राजस्थान के प्रख्यात तीर्थ नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर में सजाई जाती है। पानी पर रंग चूर्ण से बनाई जाने वाली सांझी उदयपुर के गोवर्धननाथ जी के मंदिर में बननी प्रारंभ हुई। तब से यह सांझी वहीं बनती आ रही है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के उपरान्त आप :

- सांझी चित्रण की परम्परा को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- गोबर से बनाई जाने वाली, केले के पत्तों से बनाई जाने वाली एवं पानी पर रंगीन चूर्ण डाल कर बनाई जाने वाली सांझी के बारे मे वर्णन कर सकेंगे;
- तीनों प्रकार से बनाई जाने वाली सांझियों की बनाने की विधियों का अंतर कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार की सांझियों को बनाने में काम आने वाली सामग्री को पहचानेंगे और उनका उपयोग कर सकेंगे;
- सांझी में बनाए जाने वाले अभिप्रायों की सूची तैयार कर सकेंगे।

3.1 सामान्य परिचय

शिक्षार्थी, अब हम सांझी कला का सामान्य परिचय जानेंगे। गोबर की सांझी का कहीं सांझफूलनी तो कहीं सांझाफूली नाम भी सुनने को मिलता हैं, कोई इसका संबंध ब्रह्मा की मानसी कन्या संध्या से तो कोई देवी दुर्गा तथा पार्वती से जोड़ता है। संध्यादेवी तथा नौ देवी के रूप में भी इसकी मान्यता है। सांझी का संबंध कोई ब्रजदेवी राधिका से जोड़ते हैं। यह भी कहा जाता है कि राधिका ने कृष्ण को रिझाने के लिए संध्या की जो आकृति बनाई थी वही सांझी के नाम से विख्यात हो गई। ब्रज क्षेत्र में सांझी मंडन का भव्य उत्सव देखने को मिलता हैं वहां प्रत्येक राधा-कृष्ण मंदिर में सांझी के माध्यम से कृष्ण लीलाओं की एक से बढ़कर एक झांकियां और लीला देखने को आसपास ही नहीं दूरदराज के क्षेत्रों तक का अपार जनसमूह आता है।

गोबर की सांझी में बनने वाली विभिन्न आकृतियां या तो तिथि क्रम के अनुरूप अथवा तिथि की संख्या के अनुसार बनाई जाती हैं। दस दिनों तक बनने वाली सांझी के बाद कोट बनाया जाता है। कोट से तात्पर्य परकोटे से है जो सुरक्षा के लिए किसी भी गढ़, महल अथवा घर के चारों ओर बनाया जाता है। यह कोट सांझी के अंत तक बना रहता है और ऐसा ही परकोटा अन्य सांझियों में भी बनाया जाता है जो उनकी खूबसूरती में चार चाँद लगा देता है। परकोटा के मूल में नगर स्थापना का कथानक जुड़ा हुआ है। इन सांझियों में कृष्ण की द्वारिकापुरी का प्रतीक रूप देखने को मिलता है।

3.2 पारम्परिक सांझी के अभिप्राय/मोटिफ

गोबर की सांझी में बनाई जाने वाली आकृतियों की सूची इस प्रकार है।

एकम : एक तारा, एक पछेटा, एक सूरज, एक जलेबी, एक खजूर, एक घेवर, एक फेणी, एक कलशी

बीज : बांदरवाल, दूज का चांद, बेलन-चकला, सांझी-सांझा, दो जनेऊ, दो मजिरा, झालर-डंका

तीज : तीन तिबारी, तारा मंडल, तीर-धनुष, तराजू-बाट, ताल-तलैया, तीरथधाम

चौथ : चौपड़, चरभर, चार चोर, चरखा, चकरी भंवरा, चांद-तारे, चींटा-चींटी

पांचम : पत्तल-दोने, पतंग, पान, पांच पछेटे, पाँच तारे, पाँच पांडव, पंखी, पाँच साथिए, पनवाड़ी

छठ : छाबड़ी, छड़ी, छहकली का फूल, छाछ-बिलोना

सातम : सात ऋषि, सातिया, सांझासवार, सरवर, सात सहेलियाँ

आठम : अठकली फूल, आंवला का झाड़, आम, आमली, अखरोट, आल

नम : नम, नीमड़ी, निसरणी, नल दमयंती, नौ डोकरे-डोकरी, नाग-नागिन

दसम : दानपेटी, दस कोथली, दाल-बाटी, दवात-कलम

ग्यारस से अमावस : सांझी कोट

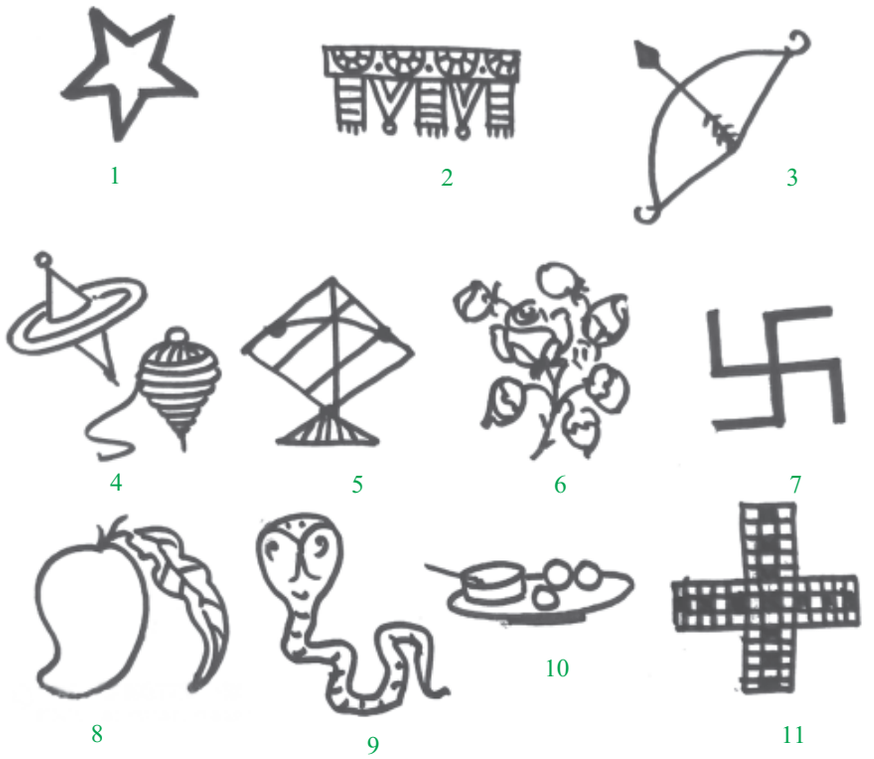

चित्र 3.1

3.3 सांझी बनाने हेतु आवश्यक सामग्री

- 18" × 24" आकार का प्लाई बोर्ड अथवा हार्ड बोर्ड
- पानी भरने के लिए गोल अथवा आयताकार ट्रे।
- पोस्टर कलर
- विभिन्न रंगों की पन्निया अथवा कागज
- केले के पत्ते
- विभिन्न प्रकार के फूल-पत्ते
- महीन कपड़ा
- बांस की खपच्चियाँ
- कैंची
- पैंसिल
- स्केल
- फैवीकॉल
- सामान्य कागज

3.4 पारम्परिक विधि

अब हम सांझी का पारम्परिक विधि सीखेंगे। सांझी में बनने वाली आकृतियां निम्नानुसार है।

पानी पर रंग चूर्ण से बनने वाली सांझी के लिए सर्वप्रथम समतल बर्तन लेकर उसमें पानी भर दिया जाता है फिर उसके दांये-बांये थोड़ी सी जगह छोड़कर बांस की खपच्चियाँ लगा दी जाती हैं। छूटी हुई जगह खाली रखकर खपच्चियों के बीच की जगह में सांझी बनाई जाती है। खपच्चियों के बाहर का भाग दर्शकों को दिखाने के लिए होता है। बर्तन हिलाने से पूरे बर्तन का पानी हिलने से सांझी भी झिलमिल करती हुई बड़ी सुन्दर लगती है। पहले पानी पर सफेद अथवा लाल पत्थर या राल का पाउडर और फिर कोयले का पाउडर भरभराया जाता है। फिर सांझी मांडने के लिए कागजी सांचा रखा जाता हैं, उस सांचे में मनचाहा रंग भुरकाया जाता है। ये रंग सूखे होते हैं जिन्हें चावल, कोयला, ईंट, पीली मिट्टी, हल्के पत्थर आदि को कूट-पीस कर घर में ही तैयार कर लिया जाता है। अब सभी तरह के स्टोन कलर भी काम में लिये जाते हैं, जो बाजार में मिलते हैं।

रंग भुरकाने के लिए महीन कपड़े में रंग का चूर्ण लेकर उसे ऊंगली की सहायता से छानते हुए आवश्यकतानुसार साँचे में भरा जाता है। रंग भरने के बाद सांचा उठा लिया जाता है। कभी-कभी एक ही चित्र को दो-दो, तीन-तीन, चार-चार रंगों तक में सजाना पड़ता है। किसी विशेष चित्र को चमकीला एवं आकर्षक बनाने के लिए बादला छिड़का जाता है। पानी के ऊपर की तरह अन्दर भी इसी प्रकार की सांझी मांडी जाती है। ऐसी स्थिति में पहले खाली बर्तन में सांझी छितरा ली जाती है और फिर बड़ी सावधानी से उस पर पानी डाल दिया जाता है।

सांझी में कृष्ण ने ब्रज, गोकुल, वृंदावन, मथुरा और द्वारिका में जो लीलाएं की उनका दर्शन कराया जाता है। अधिकतर लीलाएं यमुना के किनारे हुईं। इसलिए यमुना के कई दृश्य बड़े आकर्षक रूप में देखने को मिलते हैं। इस सांझी का कोई एक क्रम नहीं रहकर मनचाहे दृश्यों को दिखाया जाता है। मुख्य रूप से ये लीला दृश्य इस प्रकार हैं:

कमल के पत्ते पर विष्णु सोये हुए, उनकी नाभी से कमलनाल द्वारा ब्रह्माजी का अवतरण, गोकुल-मथुरा में कृष्ण जन्मोत्सव, दानलीलाओं में गोपियों को सखाओं के साथ कृष्ण द्वारा रोकना, पहाड़ों के मध्य ब्रज के महल, पेड़-पौधे, कृष्ण द्वारा सखाओं के साथ गेंद खेलना, गेंद का यमुना में गिरना, कृष्ण द्वारा नाग दमन करना इत्यादि।

कोट के रूप में कंस के भव्य महल और उनके पास चांडुलजेठी नामक घमंडी पहलवान को पछाड़ते कृष्ण, यमुना नदी में रंगबिरंगी मछलियां, कछुए तथा मगरमच्छ क्रीडा करते हुए, दस हजार हाथियों के बल को समेटे कोइलिया पीर नामक हाथी के दांत खट्टे करते कृष्ण, विश्रामघाट जहाँ कृष्ण ने कंस को पछाड़ने के बाद विश्राम किया।

उल्लेखनीय है कि अब पूरे श्राद्धपक्ष में सांझीकला का चित्रण बहुत कम देखने को मिलता है। अब सुविधानुसार ही कहीं सात दिन, कहीं दस दिन तो कहीं अनियमित सांझी बनाई जाती है। यही नहीं, अब बाजारों में भी इन सांझियों के चित्र मोटे कागज पर मिलने लग गए हैं। इन्हीं को खरीदकर बालिकाएं अपने घरों में सजाकर पूजा करती हैं।

प्रायोगिक अभ्यास 1

शिक्षार्थी, आपको सांझी की पारम्परिक विधि सीखनी है। अब हम चरणबद्ध तरीके से स्टेन्सील सांझी बनायेंगे।

स्टैंसिल सांझी ज्यादातर मथुरा बृन्दावन में बनाये जाते हैं। जिनमें राधा कृष्ण की रासलीला बांसुरी बजाते कृष्ण, पेड़ पौधे, फूल, गोपियां आदि प्रमुख हैं। आइये हम स्टैंसिल सांझी के चित्र बनाते सीखें।

प्रथम चरण : सबसे पहले आवश्यक सामग्री को इकट्ठा करते हैं। पहले हम स्टैंसिल बनाने के लिये 100-300 GSM का पेपर लेंगे जो स्टैंसिल बनाने के लिए उपयुक्त है। इसके साथ ही हम पेंसिल रबर, स्टैंसिल नाइफ और बैक ग्राउण्ड के लिये रंगीन पेपर लेंगे। इसके बाद चित्र का चयन करेंगे। आप हाथों से भी बना सकते हैं या अन्य चित्र भी ले सकते हैं। यहाँ हमने कृष्ण का बांसुरी बजाते हुए चित्र का चयन किया है।

चित्र 3.2

दूसरा चरण : अब हम पेंसिल से स्टैंसिल पेपर पर कृष्ण के चित्र की स्कैच तैयार करेंगे। इसी के साथ कहीं मोटी तो कहीं पतली लाइनों से डिजाइन बनायेंगे। अब कागज के कटने वाले हिस्से में रंग भरेंगे। इससे सुनिश्चित हो जायेगा कि आपको कौन सा भाग काटना है।

चित्र 3.3

तीसरा चरण : स्टैंसिल पूरा करने के बाद बारी आती है उन भागों को काटने की जहां आपने रंग भरा है। सावधानीपूर्वक उन भागों को नाइफ से काटें। सीधी लाइन के लिए स्टील स्केल का प्रयोग कर सकते हैं और घुमावदार कट्स के लिए पेपर को घुमा कर काटें। ग्लेज पेपर या मारबल पेपर उपयुक्त होते हैं। ध्यान रहे यह बारीकी से कटना चाहिए। कटाई करते वक्त धैर्य और सावधानी जरूरी है।

चित्र 3.4

चौथा चरण : आखिरी चरण में स्टैंसिल के पीछे बैक ग्राउण्ड पेपर लगाएँ और जो भी चाहें रंग चुन सकते हैं। हमने यहाँ लाल रंग के पेपर का प्रयोग किया है।

चित्र 3.5

प्रायोगिक अभ्यास 2

अब हम एक और सांझी बनायेगे जो गाय के गोबर से बनती है।

गोबर सांझी पंजाब प्रान्त में बनाये जाते हैं। इस लोककला में गोबर से माता सांझी का चित्र बनाते हैं फिर महिलायें इनकी पूजा करती हैं। परम्परा अनुसार नवरात्रों में ही मां सांझी को बनाया जाता है।

प्रथम चरण : सबसे पहले हमें मिट्टी और गोबर एकत्र करना है। मिट्टी को पहले कूट कर फिर भिगो कर रखते हैं। इसके पश्चात अच्छी तरह गूंथते हैं। लोच तैयार की जाती है ताकि सूखने पर यह फटे नहीं। इसके बाद हाथों से लोई बनाकर विभिन्न आकार में परिवर्तन करते हैं। माता को सजाने के लिये विभिन्न आकार तैयार करते हैं, जैसे- हाथ, सूर्य, चांद, आभूषण आदि। जैसा कि आप चित्र में देख रहे हैं।

चित्र 3.6

दूसरा चरण : जब यह सूख जाये तो इन आकृतियों में सजाने के लिये रंगों का प्रयोग करते हैं। ज्यादातर प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता है। परन्तु समय के अनुसार अब एक्रेलिक रंगों का भी प्रयोग होने लगा है।

चित्र 3.7

तीसरा चरण: तीसरे चरण में सभी अंगों को किसी लकड़ी में या दीवार में गोबर की सहायता से चिपका दें और फिर सूखने के लिये रख दें।

चित्र 3.8

चौथा चरण : अंत में माता की मूर्ति को आप सजा दें। जैसे बिन्दी, चूड़ियों, आभूषण, आंख, कान के झूमके आदि को रंगों से भर दें। इस तरह सांझी माता की मूर्ति तैयार है।

चित्र 3.9

प्रायोगिक अभ्यास 3

अब हम जल सांझी की विधि जानेंगे।

जल सांझी बनाने की विधि

15वीं शताब्दी में इस कला की शुरुआत बृन्दावन में हुई। कहा जाता है कि राधा जी कृष्ण को मोहने के लिए रंग बिरंगे चित्र बनाती थी। यह कला विभिन्न माध्यमों में बनायी जाती है। उदयपुर, राजस्थान में जल सांझी लोकप्रिय है। आइये जल सांझी कैसे बनाई जाती है, इसे समझते हैं।

प्रथम चरण : सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण है कि यह बनाने के एक दिन पहले पानी को तैयार किया जाता है। साफ पानी को एक बड़े बर्तन में स्थिर करने के लिये रखते हैं फिर पानी के स्थिर होने के बाद पानी पर तैरने के लिए एक आधार रंग बनाते हैं। आधार रंग आमतौर पर सफेद होता है, जो शंख भस्म से तैयार होता है। काले रंग के लिए कोयला पाउडर का प्रयोग होता है। इसके बाद छननी से इसको धीरे-धीरे पानी में छिड़कते हैं। हल्के होने के कारण तैरते हैं। थोड़ी देर बाद स्थिर होकर एकसार हो जाते हैं। इस तरह एक आधार तैयार हो जाता है।

चित्र 3.10

दूसरा चरण : इस पेंटिग को बनाने के लिए कोई विषय चुनते हैं। आमतौर पर पौराणिक कथाओं के आधार पर चित्रकारी होती है। यहां पर हमने हनुमान जी को संजीवनी बूटी पर्वत ले जाते दिखाया है। तो सबसे पहले हनुमान जी का चित्र बनाते हैं। फिर स्टैंसिल तैयार करके बारीकी से काटते हैं। स्टेंसिल्स के लिए पेपर कटर का इस्तेमाल करते हैं। इस तरह मुख्य चित्र तैयार करते हैं। आप हाथों से भी बना सकते हैं या कम्प्यूटर ग्राफिक के द्वारा भी बना सकते हैं।

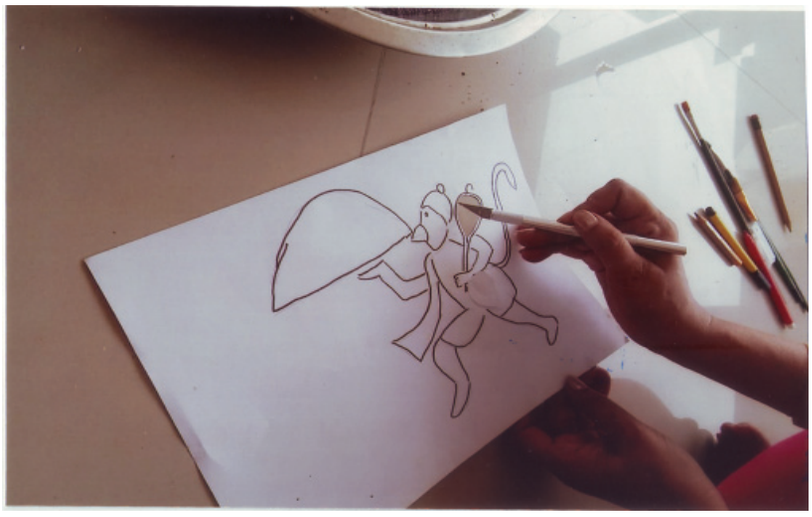

चित्र 3.11

तीसरा चरण : हनुमान जी का चित्र तैयार करके उसे धीरे से पानी में जहां आधार बनाकर रखा है, उस पर रखते हैं। अब इनकी रंगों से सजावट करते हैं। रंगों के लिये प्राकृतिक रंगों या सिन्थेटिक रंगों का प्रयोग करते हैं। विभिन्न रंगों के गुलाल या अबीर से भी रंग-बिरंगे डिजाइन बना सकते हैं। रंगों का चुनाव आप अपनी मर्जी से कर सकते हैं।

चित्र 3.12

चौथा चरण : रंगों को भरने के बाद आप धीरे से स्टेंसिल उठा दें। आप देखेंगे की जो रंग आपने स्टेंसिल में डाले थे वे बारीकी से उभर आते हैं। इसमें हनुमान जी की आकृति सफाई से दिख रही है, रंग फैलते नहीं। पेड़, फूल आदि बनाने के लिये रंगोली की तरह इसे सजा सकते हैं। आप देखेंगे पानी में तैरते चित्र बेहद मनमोहक दिखाई देंगे।

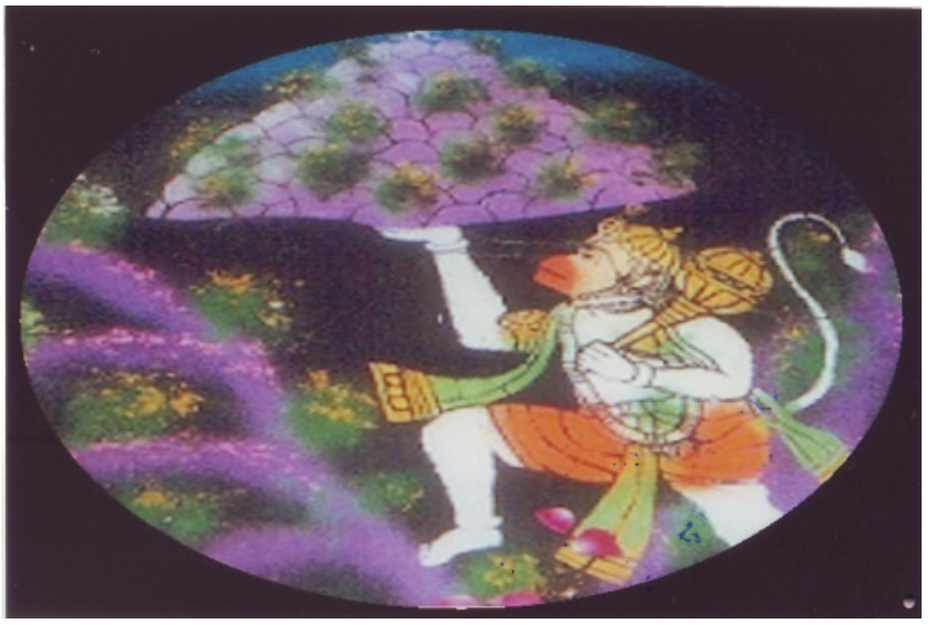

चित्र 3.13

आपने क्या सीखा

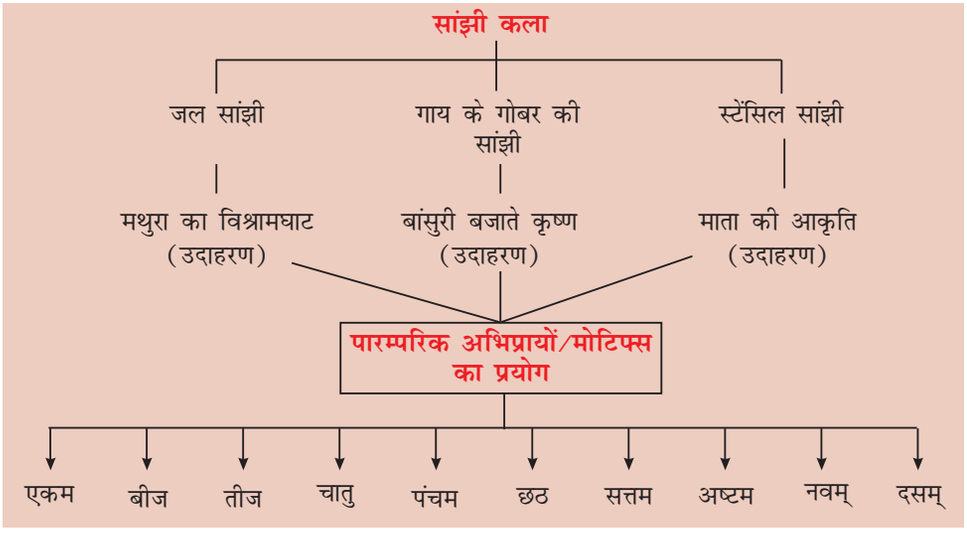

पाठांत प्रश्न

1. विद्यार्थी अपने घर की दीवार पर गोबर की विविध आकृतियां उभारकर उन्हें अलग-अलग रंगों के फूलों तथा पत्तियों से सजाएं।

2. केले के पत्तों को एकत्र कर कैंची की सहायता से मनचाही आकृतियां काटकर उन्हें जमीन पर सफेद कपड़ा बिछाकर संयोजित करें। ये आकृतियां कपड़े से अलग न हो पायें और अपनी चमक देती रहें इसके लिए उन पर थोड़ी-थोड़ी देर में पानी का छिड़काव करें।

3. पानी का छोटा सा बर्तन लेकर उस पर पाउडर भुरकाएं। फिर मोटे कागज पर सुई अथवा नुकीले चाकू द्वारा मनचाही आकृति का सांचा तैयार करें। इस सांचे को बड़ी सावधानी से पानी पर रखें। उसके बाद महीन कपड़े द्वारा मनचाहे रंग भर कर आकर्षक चित्र बनाएँ। सांचा उठाने के बाद देखेंगे तो सांझी पानी पर झिलमिलाती नजर आएगी।

शब्दकोश

गोहली : सांझी बनाने का आधार। मिट्टी-गोबर के मिश्रण से बनाये गए लेप को दीवार पर कपड़े की सहायता से लीप दिया जाता है, इसी को गोहली कहते हैं। सांझी इसी गोहली पर बनाई जाती है।

पछेटा : खेलने के लिए पत्थर के कंकड़

मजीरा : कटोरीनुमा आकृति लिए मजीरा पीतल, तांबा, कांसा, लोहा आदि मिश्र धातु से बनाया जाता है। गुंबज जैसी गोलाई का उभार लिए ऊपर बीच में छेद कर

टिप्पणियाँ

डोरा बांधा जाता है इसको पकड़ कर मजीरा बजाया जाता है। मजीरे दो होते हैं। इसके परस्पर आघात से ध्वनि निकलती है।

झालर-डंका : मंदिरों में आरती के समय बजाई जाने वाली झालर मिश्र धातु की मोटी परत लिए खड़ किनारों वाली छोटी थालीनुमा आकृति लिए होती है। इसके किनारे पर दो छेद कर डोरी पिरो दी जाती है। डोरी को अंगूठे से लटकाकर लकड़ी की जिस डंडी से इसके उल्टी तरफ मध्य भाग में आघात किया जाता है। वह डंका कहलाता है।

चकरी-भंवरा : लकड़ी की बनी फिरकनी तथा लट्टू।

पत्तल-दोना : भोजन करते समय थाली-कटोरा की जगह काम में लिये जाने वाली वस्तु। इसका निर्माण ढाक के पत्तें से होता है। पत्तल-दोने का उपयोग प्राय: सामूहिक भोज में किया जाता है।

पनवाड़ी : पान की खेती के लिए विशेष प्रकार का खेत। पनवाड़ी बाड़ी की तरह होती है। इसका निर्माण सण की डंडियों द्वारा किया जाता है जो खेत को तीनों ओर से ढ़के रखती है।

कोथली : छोटी थैली।

वांदरवाल : कपड़े की बनी थैलियों से निर्मित सजावट।

चितराम : चित्रराम का अर्थ चित्र बनाने से है। इसे बनाने वाला चितेरा कहलाता है।

ताकड़ी-तोला : ताकड़ी से तात्पर्य तराजू और तोला का अर्थ वस्तु को तोलने वाले बाट से है। तकड़ी के दो पलड़ों में से एक में तोली जाने वाली वस्तु तथा दूसरे में बाट रखे जाते हैं।

चरभर : एक प्रकार का खेल। इसे छोटे और बड़े सभी खेलते हैं। इसे खेलने के लिए पासे के रूप में इमली के दो बीज (कूंगचे) की फाड़ से बने चार पासे (चीबटें) होते हैं। यह कहीं भी खेला जा सकता है।

फूलगरिये : भगवान श्रीनाथजी के श्रृंगार के लिए फूल एकत्र करने वाले। ये माली जाति के होते हैं। अत: इन्हें फूलमाली भी कहते हैं।

सिंघाड़ा : जल का फल। यह कच्चा तथा पक्का दोने रूपों में खाया जाता है। इसके आटे से कई तरह के खाद्य पदार्थ बनते हैं जो व्रत-उपवास में बड़े उपयोगी होते हैं।